Dr. Gautam Kumar.
BA(H). Part-I
PAPER-II

अरविन्द का मानव एकता का आदर्श (Aurbindo's Ideal of Human Unity)

प्रथम विश्व युद्ध ने सम्प्रभुता सम्पन्न राज्यों की आपसी शत्रुता के विनाशकारी परिणामों को स्पष्ट कर दिया था। ऐसी स्थिति में विश्व के दार्शनिकों का ध्यान एक ऐसे विश्व की धारणा की ओर आकृष्ट हुआ, जो सम्पूर्ण मानव जाति को एक ही इकाई का रूप प्रदान कर दे। अरविन्द ने अपनी रचना "मानव एकता का आदर्श" में अपनी इस धारणा को व्यक्त किया है। उन्होंने "मानवीय एकता के आदर्श" को प्रकृति की योजना का अंग मानते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में एक दिन यह स्वप्न अवश्य ही साकार होगा, भले ही आज वह इतना धूमिल क्यों न दिखाई देता हो।

चाहे हम इस बात को स्वीकार करें या ना करें, यह तथ्य है कि हम सब एक-दूसरे के धारक हैं। एक आन्तरिक तथा बाहरी आवश्यकता हमें एक-दूसरे के प्रति इतना आकर्षित करती है कि हम स्वयं को क्रमशः परिवार, कबीले तथा ग्राम समूहों में संगठित करने के लिए प्रेरित और बाध्य हो जाते हैं। इतिहास गवाह है कि मनुष्य की प्रवृति सदैव उत्तरोत्तर बड़ी इकाइयों का निर्माण करने की रही है। गाँव अपने आपको राज्यों में, राज्य अपने आपको साम्राज्यों में संगठित करते रहे हैं और यही प्रवृति भविष्य में विश्वसंघ को जन्म देगी। अरविन्द की मान्यता है कि सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य का विचार अपने आप में अपर्याप्त और अपूर्ण है। अरविन्द का मानना था कि विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें इस बात को स्वीकार करना होगा कि सम्पूर्ण

मानव जाति एक इकाई है। इस प्रकार अरविन्द ने मानव एकता के आदर्श को प्रस्तुत किया। जिसकी प्राप्ति हमारे द्वारा तीन स्थितियों में से किसी एक स्थिति के आधार पर की जा सकती है:—

(i) विश्व राज्य का निर्माण।

(ii) राष्ट्र राज्यों को एक प्रकार के विश्व संघ में संगठित करने की स्थिति।

(iii) ऐसी संभावना करते हैं कि विश्व में किसी समय एक संयुक्त राज्य यूरोप, एक संयुक्त राज्य अमेरिका, एक संयुक्त राज्य एशिया और एक संयुक्त राज्य अमेरिका का निर्माण हो जाय और राज्यों के ये समस्त संघ मिलकर एक "विश्व परिसंघ" बना लें।

अरविन्द ने "स्वतंत्र विश्वसंघ" की धारणा का प्रतिपादन किया। स्वतंत्र विश्वसंघ या एकीकरण की इस व्यवस्था में व्यक्तियों को अपने क्षेत्र, जाति, संस्कृति और अभिरुचि स्वतन्त्रता आदि के अनुसार अपना-अपना समूह बनाने का अधिकार होगा, लेकिन ये स्वतंत्र समूह सम्पूर्ण मानव जाति के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेंगे। अरविन्द के विश्वसंघ का बहुत अधिक महत्वपूर्ण तत्व मनोवैज्ञानिक एकता है वे मानते हैं कि मनोवैज्ञानिक एकता के आधार पर ही मानव जाति का आदर्श एकीकरण संभव है। अरविन्द विश्व संघ की स्थापना में आध्यात्मिक एकता या मनोवैज्ञानिक एकता को सबसे अधिक महत्व देते हैं। स्वतंत्र विश्वसंघ की स्थापना का एकमात्र उपाय यही है कि हम मनुष्य तथा विश्व के तत्वतः आध्यात्मिक स्वरूप में मानव एकता का रहस्य खोजें। आज की परिस्थितियों में अरविन्द का "मानव एकता का आदर्श" मानव जाति को विनाश के गर्त से बचाने का स्थायी और प्रभावशाली समाधान है।